संपादक का नोट

मसीह में, मेरे प्यारे भाइयों और बहनों, प्रभु की स्तुति करो। पिछला महीना हमारे प्यारे बच्चों द्वारा प्राप्त कई आशीर्वादों का महीना रहा है, और यह केवल हमारे सर्वशक्तिमान प्रभु यीशु की कृपा से ही रोज ऑफ शेरोन चर्च के सभी सदस्यों पर संभव हुआ है। प्रभु के सभी शक्तिशाली कार्यों और सभी के जीवन में अच्छाई के लिए अकेले परमेश्वर को लाखों धन्यवाद और सारी महिमा।

भजन संहिता 125:1–2 ''1 जो यहोवा पर भरोसा रखते हैं, वे सिय्योन पर्वत के समान हैं, जो टलता नहीं, वरन् सदा बना रहता है। 2 जिस प्रकार यरूशलेम के चारों ओर पहाड़ हैं, उसी प्रकार यहोवा अपनी प्रजा के चारों ओर अब से लेकर सर्वदा तक बना रहेगा।''

क्या आप इस रहस्य को जानते हैं कि दाऊद ने युद्धों में विजय का अनुभव कैसे किया? दाऊद ने यहोवा से अपने सारे मन, बुद्धि और प्राण से प्रेम किया। यहाँ तक कि इस्राएल के राजा के रूप में, युद्धों के दौरान उसने कभी भी अपनी सेना पर अपना विश्वास और भरोसा नहीं रखा; लेकिन वह केवल अपने प्रभु परमेश्वर पर केंद्रित था। उसने वही किया जो भविष्यवक्ताओं ने उससे कहा था, और इसलिए उसने हर युद्ध में जीत का अनुभव किया।

नीतिवचन 3:5 ''तू अपनी समझ का सहारा न लेना, वरन् सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना।'' बाइबिल स्पष्ट रूप से उल्लेख करता है कि हमें अपनी समझ पर भरोसा नहीं करना चाहिए, बल्कि पूरे हृदय से प्रभु पर भरोसा करना चाहिए। दुर्भाग्य से, हम इस वचन को लापरवाही से लेते हैं, और इसलिए हमारे जीवन में कोई आशीष प्राप्त नहीं होता है। हमारे प्रभु यीशु हमारे अपने–अपने जीवन में हमारा नेतृत्व और मार्गदर्शन तभी कर सकते हैं जब हम अपने आप को पूरी तरह से उनके सामने आत्मसमर्पण कर दें। इसका खूबसूरती से उल्लेख किया गया है यशायाह 58:11 में ''यहोवा तुझे लगातार लिए चलेगा, और अकाल के समय तुझे तृप्त और तेरी हड्डियों को हरी भरी करेगा; और तू सींची हुई बारी और ऐसे सोते के समान होगा जिसका जल कभी नहीं सूखता।'' जब प्रभु परमेश्वर

हमसे वादा कर रहे हैं कि वह हमारा मार्गदर्शन करेंगे और कठिनाई के समय में हमारी देखभाल करेंगे, तो हम जीवन में और अधिक क्या मांग सकते हैं, या और क्या चाहिए ?

आदम में मृत्यु है, परन्तु मसीह में जीवन है। 1 कुरिन्थियों 15:22 ''और जैसे आदम में सब मरते हैं, वैसे ही मसीह में सब जिलाए जाएँगे,'' इसलिए हमारे लिए आदम की बजाय मसीह का जीवन जीना महत्वपूर्ण है। इस बात की संभावना है कि जब हम मसीह का जीवन जीने की कोशिश करते हैं, तो हमें शर्मसार किया जा सकता है या सताया जा सकता है। हो सकता है कि हम इस दुनिया के लोगों की तरह जीवन का आनंद न उठा पाएं। लेकिन अंतिम चुनाव हमारे हाथ में है कि हम कुछ समय के सुख की तलाश में हैं या अनंत जीवन की। यह हम पर निर्भर है कि हम आदम की मृत्यु चाहते हैं या मसीह में जीवन चाहते हैं।

इसलिए हमें हर तरह से अपने प्रभु परमेश्वर यीशु का नाम हमेशा ऊंचा और ऊंचा उठाने का प्रयास करना चाहिए।

याद रखें, हमारा परमेश्वर एक जीवित परमेश्वर है। वह हमारी सुनता है और हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर देने के लिए हमेशा तैयार रहता है। वह हमें समझ से परे ज्ञान का आशीर्वाद देंगे, ताकि दुनिया के लोग उन बच्चों को देख सकें और उन पर आश्चर्य कर सकें जिन्हें वास्तव में परमेश्वर ने आशीष दिया है।

हम फिर से मिलें तब तक,

मसीह में आपकी बहन,

पास्टर सरोजा

अन्य देवताओं के आगे न झुकें।

यहूदा 1 :9 कहता है ''परन्तु प्रधान स्वर्गदूत मीकाईल ने, जब शैतान से मूसा के शव के विषय में वाद–विवाद किया, तो उसको बुरा–भला कहके दोष लगाने का साहस न किया पर यह कहा, "प्रभु तुझे डाँटे।'' मूसा परमेश्वर का शिष्य था, उसने 120 वर्ष का पूरा जीवन जिया। उसकी मृत्यु के बाद, उसके शरीर पर दावा करने के लिए, प्रभु के दूत और शैतान के बीच विवाद हुआ। ऊपर के वचन में, हम देखते हैं कि स्वर्गदूत मीकाईल उसके शरीर पर दावा करने आया था, इसलिए शैतान भी उसी का दावा करने आया था। आज भी, इस दुनिया में, हम देखते हैं कि अपने प्रियजनों के शव पर दावा करने को लेकर परिवारों के भीतर लड़ाई चल रही है। हम कई बार देखते हैं कि भाई–बहन अपनों की लाश के लिए लड़ते हैं। इसका कारण यह है, क्योंकि कई बार हमारे जीवन को प्रभु के लिए एक सच्ची गवाही के रूप में नहीं जिया जाता है। इस प्रकार इस पृथ्वी पर एक शव को लेकर विवाद होता है। मूसा ने एक धर्मी जीवन जिया, उसे इस्राएलियों को गुलामी से आजादी में लाने के लिए एक अगुआ के रूप में चुना गया था। परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा दी कि वह अपनी प्रजा इस्राएलियों को बंधन से छुड़ाकर उस देश में ले आए जहां मधु और दूध की धारा बहती है। हम जानते हैं कि यहोवा ने मूसा से आमने सामने बात की थी। लेकिन उसकी मौत के बाद शैतान उसकी लाश के लिए भी लड़ता है। आप और मैं कौन हैं? हमारे लिए जीवन के इस पहलू पर विचार करना महत्वपूर्ण है। हम निश्चित रूप से अंत समय के करीब पहुंच रहे हैं। जब हम अपने आस–पास हो रहे संकेत और चीजें देखते हैं, यानी बड़ी संख्या में लोग गायब हो रहे हैं, अगर हम अखबार पढ़ते हैं और टीवी समाचार देखते हैं तो हम जीवन के इन सचाई को देख सकते हैं। हम कभी नहीं जानते, एक पूरी सभा मण्डली भी गायब हो सकती है, कोई कभी नहीं बता सकता। हमारे लिए जीवन में अधिक मेहनती होना जरूरी है। मूसा के जीवन को देखकर और यह विश्वास करते हुए कि शैतान उसके शरीर पर कैसे अधिकार करना चाहता था, हमें भी जागृत होना चाहिए। पवित्र शास्त्र में हम लाजर और अमीर आदमी की कहानी जानते हैं, लाजर की मृत्यु के बाद प्रभु का दूत आया और लाजर के शरीर को ले गया लेकिन अमीर आदमी के शरीर को शैतान ने नरक की आग में ले लिया। निश्चित रूप से यह अंत समय के दौरान होगा, शैतान भी इस पृथ्वी से शरीर लेने के लिए आएगा। लेकिन याद रखें, हमें अपने शारीरिक शरीर के बारे में कभी चिंतित नहीं होना चाहिए, यह हमारी आत्मा है जिसे हमें बचाने की

जरूरत है। यह महत्वपूर्ण है कि हमारी आत्मा प्रभु के साथ शांति से अनंतकाल विश्राम में प्रवेश करना चाहिए। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि यहाँ लड़ाई मूसा की आत्मा के लिए नहीं थी, बल्कि उसके शारीरिक शरीर के लिए था। हां, शैतान हमारे शारीरिक शरीर पर दावा करने आएगा क्योंकि हमारे द्वारा किए गए अधिकांश पाप शारीरिक और शारीरिक प्रकृ ति के होते हैं। यह हमारे शारीरिक विचारों और कार्यों के कारण है कि हम पाप करते हैं। सो ऊपर के वचन में हम देखते हैं कि वह शैतान भी मीकाईल स्वर्गदूत के साथ मूसा की देह को लेने आया था।

हम में से कोई भी उत्तम नहीं है, हम इस पापी दुनिया में रह रहे हैं, इसलिए हम सभी पाप करते हैं। लेकिन, हमारा शारीरिक शरीर प्रभु का मंदिर है, प्रभु इस मंदिर में निवास करते हैं। इस प्रकार हमें इस मंदिर को प्रभु के लिए पवित्र और शुद्ध रखना चाहिए। यदि हम प्रतिदिन यहोवा का भय मानें, तो हमारा शरीर यहोवा परमेश्वर के लिए पवित्र बना रहेगा। हम इसे निश्चित रूप से शुद्ध और स्वच्छ रखेंगे। शैतान हम पर कभी विजय नहीं पाएगा। हमें इस मंदिर यानी अपने शरीर को प्रभु के लिए पवित्र कैसे रखना चाहिए? आइए हम पढ़ें प्रकाशितवाक्य 14: 7 ''उसने बड़े शब्द से कहा, ''परमेश्वर से डरो, और उसकी महिमा करो, क्योंकि उसके न्याय करने का समय आ पहुँचा है; और उसका भजन करो, जिसने स्वर्ग और पृथ्वी और समुद्र और जल के सोते बनाए।'' अंत का समय निकट है, न्याय का दिन निकट आ रहा है। इसलिए, यह अनुग्रह का समय है, हमें हमेशा अपने प्रभु परमेश्वर की स्तुति और आराधना करके अपने पवित्र मंदिर को पवित्र करने की आवश्यकता है। हम सभी इस मुहावरे को जानते हैं ''खली दिमाग शैतान की कार्यशाला है''। हमें हमेशा अपने प्रभु परमेश्वर के आदर के साथ स्तुति और आराधना करनी चाहिए, क्योंकि उनका समय निश्चित रूप से निकट और निकट आ रहा है। इस्राएली 40 वर्ष तक जंगल में भटकते रहे, जिस नगर में वे पहुंचे, वह यरीहो था। जब वे इस नगर में पहुंचे, तो यरीहो में प्रवेश न कर सके, क्योंकि फाटक बन्द थे। परन्तु यहोवा परमेश्वर ने यहोशू से कहा यहोशू 6: 2 ''फिर यहोवा ने यहोशू से कहा, ''सुन, मैं यरीहो को उसके राजा और शूरवीरों समेत तेरे वश में कर देता हूँ।'' हमारे जीवन में भी, हम इतनी बड़ी बाधा का सामना कर सकते हैं, जैसे इस्राएलियों का सामना यरीहो शहर की दीवार से हुआ था। हम जिस पहाड़ का सामना कर रहे हैं वह कितना भी विशाल क्यों न हो, प्रभु हमारे लिए रास्ता साफ कर सकते हैं। जैसे परमेश्वर ने यहोशू से कहा कि ''उसने पहले ही राजा और शूरवीरों समेत उसके हाथ में कर दिया है'' उसी तरह, परमेश्वर भी हमसे वैसे ही बात करते है और इसके द्वारा हमारे विश्वास को दृढ़ करने की आवश्यकता है। हम जानते हैं कि नूह के समय में लोगों ने पहले कभी बारिश नहीं देखी थी। इस प्रकार, जब परमेश्वर ने नूह से कहा कि वह एक जहाज तैयार करे और कि वह वर्षा भेजेंगे, नूह ने केवल परमेश्वर पर विश्वास किया। लेकिन, नूह और उसके परिवार के अलावा किसी ने भी उस पर विश्वास नहीं किया जब उसने वह प्रचार किया जो परमेश्वर ने उसे प्रचार करने के लिए कहा था।

लोगों ने नूह का मजाक उड़ाया, उसका अपमान किया और उसका मजाक बनाया। परन्तु नूह ने परमेश्वर के संदेश का प्रचार करना जारी रखा और जहाज का निर्माण पूरा करना जारी रखा। नूह ने भी पहले कभी बारिश नहीं देखी थी, फिर भी उसने विश्वास किया कि परमेश्वर ने उससे क्या कहा। हम यहाँ उपरोक्त वचन में भी देखते हैं, परमेश्वर यहोशू से बात करते है और उससे कहते है कि ''मैं पहले ही उसके हाथों, राजाओं और शूरवीरों समेत तेरे वश में कर चुका हूँ''। कई बार, प्रभु परमेश्वर हमसे भी बात करते हैं, लेकिन हम उनके वचन पर विश्वास नहीं करते हैं। यदि हम परमेश्वर के वचन पर अविश्वास करते हैं, तो हमें वह आशीषें कभी नहीं मिलेंगी जो परमेश्वर ने हमारे लिए रखी हैं। यहोशू ने इस्राएलियों को उनके जीवन में परमेश्वर की प्रतिज्ञा पूरी होने से पहले ही चेतावनी दी थी। आइए हम पढ़ें यहोशू 6 :17–19 ''17 और नगर और जो कुछ उसमें है यहोवा के लिये अर्पण की वस्तु ठहरेगी; केवल राहाब वेश्या और जितने उसके घर में हों वे जीवित छोड़े जाएँगे, क्योंकि उसने हमारे भेजे हुए दूतों को छिपा रखा था। 18 और तुम अर्पण की हुई वस्तुओं से सावधानी से अपने आप को अलग रखो, ऐसा न हो कि अर्पण की वस्तु ठहराकर बाद में उसी अर्पण की वस्तु में से कुछ ले लो, और इस प्रकार इस्राएली छावनी को भ्रष्ट करके उसे कष्ट में डाल दो। 19 सब चाँदी, सोना, और जो पात्र पीतल और लोहे के हैं, वे यहोवा के लिये पवित्र हैं, और उसी के भण्डार में रखे जाएँ।'' यहोशू ने लोगों को चेतावनी दी और उनसे कहा, ''यरीहो में किसी भी भौतिक वस्तु पर हाथ न रखना, क्योंकि इस देश में सब कुछ शापित है। केवल एक ही परिवार है, राहाब का परिवार जिसे उन्हें बचाने की आवश्यकता थी, क्योंकि इस परिवार ने बहुत से इस्राएलियों को आश्रय दिया था जो इस घर में जाकर छिप गए थे। इस प्रकार प्रभु परमेश्वर ने इस भूमि को शाप दिया है और इस प्रकार यहां सब कुछ अपवित्र है। इसलिए, कोई भी यरीहो से कुछ भी न उठाए और हमारे प्रभु परमेश्वर को दुःख पहुंचाए। उन्होंने सावधान रहने और सचेत रहने के लिए उन्हें सतर्क किया। उसने यह भी आज्ञा दी, कि जितने चान्दी, सोना और बहुमूल्य रत्न इस्राएल के लोग अपने हाथ में रखें, वे सब परमेश्वर के पवित्र भवन में लाया जाएं। आइए हम पढ़ें यहोशू 7 :1 ''परन्तु इस्राएलियों ने अर्पण की वस्तु के विषय में विश्वासघात किया; अर्थात् यहूदा गोत्र का आकान, जो जेरहवंशी जब्दी का पोता और कर्म्मी का पुत्र था, उस ने अर्पण की वस्तुओं में से कुछ ले लिया; इस कारण यहोवा का कोप इस्राएलियों पर भड़क उठा।'' आज भी, प्रभु वचन के द्वारा हमसे बात करते है, लेकिन हम में से कोई भी उनके वचन पर ध्यान नहीं देता है। जैसे यहोशू ने इस्राएलियों को यरीहो में किसी भी चीज पर हाथ न रखने की चेतावनी दी थी, वैसे ही यह सब शापित है, इस चेतावनी के बावजूद लोगों ने अवज्ञा की। इस आज्ञा न मानने के कारण इस्राएलियों पर परमेश्वर का कोप भड़क उठा। परमेश्वर आज भी हमारे साथ है, जैसे उन अच्छे पुराने दिनों में परमेश्वर ने अपने भविष्यवक्ताओं के माध्यम से बात की थी, आज भी वह अपने चुने हुए भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से हमसे बात कर रहें है। प्रभु ने हमसे वादा किया है ''मैं तुम्हारे लिए जगह तैयार करने जा रहा हूं और मैं वापस आऊंगा और तुम्हें अपने बनाये हुए स्थान में ले जाऊंगा''। जिस तरह परमेश्वर ने यहोशू से वादा किया था कि ''मैंने राजा और

शूरवीरों को तुम्हारे हाथ में कर दिया है'' उसी तरह, हमारे जीवन में भी परमेश्वर ने हमसे वही वादा किया है। इस पृथ्वी पर अपनी यात्रा के दौरान हमें प्रभु परमेश्वर की वाणी और वचन के प्रति आज्ञाकारी होने की आवश्यकता है। हमें इस संसार की वस्तुओं से कभी भी अपने आप को अशुद्ध नहीं करना चाहिए। जिस चीज में प्रभु न मिलने की चेतावनी देते है, हमें उनसे या दुनिया की चीजों से नहीं मिलना चाहिए। लेकिन जो कुछ भी परमेश्वर हमसे करने के लिए कहते है हमें अपने जीवन की किसी भी कीमत पर वह चीज करना चाहिए। वचन कहता है, ''क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे, वह उसे खोएगा; और जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोएगा, वह उसे पाएगा।'' हमारा प्रभु हमें इस दुनिया की सभी अशुद्ध चीजों से दूर रहने की चेतावनी देते है। यहोशू आकान को देखता है और कहता है यहोशू 7 : 19 ''तब यहोशू आकान से कहने लगा, ''हे मेरे बेटे, इस्राएल के परमेश्वर यहोवा का आदर कर, और उसके आगे अंगीकार कर; और जो कुछ तू ने किया है वह मुझ को बता दे, और मुझ से कुछ मत छिपा।'' जब हम खुले तौर पर अपने पापों को प्रभु के सामने स्वीकार करते हैं, तो हम उनके नाम की महिमा करते हैं। हमें अपने पापों को कभी नहीं छिपाना चाहिए, क्योंकि ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे हमारा परमेश्वर नहीं जानता, इस प्रकार हम उनसे कुछ भी नहीं छिपा सकते। हमारे जीवन में पश्चाताप का बहुत महत्व है।

हम जानते हैं कि दाऊद ने एक बहुत बड़ा पाप किया था, लेकिन जब परमेश्वर के नबी ने उसे चेतावनी दी, तो वह पछताता है और उस समय उसने भजन संहिता 51 'पश्चाताप का एक भजन संहिता' लिखा था। उसने अपने पश्चाताप के द्वारा प्रभु की महिमा की। इस प्रकार प्रभु कहते हैं ''वह मेरे मन के अनुसार है''। याद रखें, जब हम अपने पापों को स्वीकार करते हैं, तो हम अपने प्रभु परमेश्वर के नाम की महिमा करते हैं। भजन संहिता 51: 3,4 में कहा गया है ''3 मैं तो अपने अपराधों को जानता हूँ, और मेरा पाप निरन्तर मेरी दृष्टि में रहता है। 4 मैं ने केवल तेरे ही विरुद्ध पाप किया, और जो तेरी दृष्टि में बुरा है, वही किया है; ताकि तू बोलने में धर्मी और न्याय करने में निष्कलंक ठहरे।'' दाऊद ने अपने पापों को यहोवा परमेश्वर के सामने मान लिया। इस प्रकार, यहोशू ने आकान से यहोवा के सामने अपने पापों को स्वीकार करने के लिए भी कहा। आइए हम पढ़े नीतिवचन 28 :13 ''जो अपने अपराध छिपा रखता है, उसका कार्य सफल नहीं होता, परन्तु जो उनको मान लेता और छोड़ भी देता है, उस पर दया की जायेगी।'' हमें हमेशा अपने पापों के लिए परमेश्वर के सामने खुले तौर पर पश्चाताप करना चाहिए, इसे कभी भी छिपाना नहीं चाहिए। 1 यूहन्ना 1 : 9 कहता है ''यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है।'' जब हम खुले तौर पर अपने पापों को स्वीकार करते हैं, तो हम परमेश्वर की महिमा करते हैं और वह हमारे पापों को तुरंत क्षमा करने के लिए तैयार है। हमें यह कभी नहीं सोचना चाहिए कि प्रभु हमारे पापों को नहीं जानते हैं, हम मूर्ख हैं और उनकी कृपा खो देंगे। परमेश्वर ने हमारे लिए हमारे पापों से बाहर आने का मार्ग बनाया है। यह हमारा उन पर अविश्वास है, जो हमें लगता है कि हमारा परमेश्वर हमारे पापों के बारे में कुछ नहीं जानता

है। हमारा परमेश्वर हम पर अनुग्रह करता है, हमें याद रखना चाहिए कि उसने हमारे पापों की क्षमा पाने का मार्ग बनाने के लिए क्रूस पर 6 घंटे बिताए।

दानिय्येल को राजा नबूकदनेस्सर ने पकड़ लिया और उसे बाबुल ले जाया गया। दानिय्येल अब बाबुल में बंधुआई में रहता था। बाबुल में रहने के बावजूद दानिय्येल ने अपने जीवन को हल्के में नहीं लिया, वह यहोवा के लिए अपनी धार्मिकता और पवित्रता में बना रहा। वह बहुत संकीर्ण तरीके से रहता था, गलत कामों, पापपूर्ण कृत्यों से दूर रहता था। उसने लगातार प्रार्थना की और प्रभु परमेश्वर की महिमा की। हालाँकि दानिय्येल बाबुल में रहता था, उसने उनके जैसा व्यवहार नहीं किया, बल्कि वह अपने शरीर और आत्मा में प्रभु के लिए एक धर्मी जीवन जीता रहा। आइए हम पढ़ें 1 कुरिन्थियों 6: 20 ''क्योंकि दाम देकर मोल लिये गए हो, इसलिये अपनी देह के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो।'' हम भी आज एक पापमय संसार में रहते हैं, परन्तु फिर भी हम प्रभु के लिए जीते हैं और अपने आप को इस संसार में पाप करने से बचाते हैं। यही हमारी जीत होगी। हमारे लिए एक धर्मी और पवित्र जीवन जीना महत्वपूर्ण है। प्रभु परमेश्वर ने हमें अपने अमूल्य और कीमती लहू से शैतान से खरीदा है। इस प्रकार, आज हमें परमेश्वर की महिमा कैसे करनी चाहिए, अपने प्राण और अपनी आत्मा से। हमें अपने प्रभु परमेश्वर को कभी धोखा नहीं देना चाहिए। दानिय्येल 1 : 8 कहता है ''परन्तु दानिय्येल ने अपने मन में ठान लिया कि वह राजा का भोजन खाकर, और उसके पीने का दाखमधु पीकर अपवित्र न होए; इसलिये उस ने खोजों के प्रधान से विनती की कि उसे अपवित्र न होना पड़े।'' दानिय्येल ने निश्चय कर लिया था कि वह बाबुल देश के अन्न और जल से अपने आपको अशुद्ध न करेगा। हमें हमेशा याद रखना चाहिए, कि हमारा शरीर प्रभु का पवित्र मंदिर है, अगर हम इसे नष्ट या अपवित्र करते हैं तो प्रभु हमें नष्ट कर देंगे।

हमें हमेशा प्रभु का भय मानना चाहिए। वह एक ऐसा परमेश्वर है जो न तो सोता है और न ही ऊंघता है, बल्कि अपने बच्चों पर नजर रखता है। 1 कुरिन्थियों 3: 17 ''यदि कोई परमेश्वर के मन्दिर को नष्ट करेगा तो परमेश्वर उसे नष्ट करेगा; क्योंकि परमेश्वर का मन्दिर पवित्र है, और वह तुम हो।'' प्रभु का मंदिर पवित्र है, इस प्रकार आप और मैं उनके पवित्र मंदिर हैं, हमें इसे अपने दोषों से अपवित्र नहीं करना चाहिए। जैसे दानिय्येल ने निश्चय किया कि वह बाबुल देश की किसी वस्तु से अपनी देह को अशुद्ध न करेगा। याद रखें कि अंत समय बहुत ही करीब है। हमें अपनी आत्मारिक आंखें और कान खोलने चाहिए और अंत समय को पहचानना चाहिए। आइए देखें कि कैसे शद्रक, मेशक, और अबेदनगो के परमेश्वर में विश्वास ने उन्हें नबूकदनेस्सर की मूर्ति के आगे झुकने की अनुमति नहीं दी। आइए हम पढ़े दानिय्येल 3: 13 – 26 ''13 तब नबूकदनेस्सर ने रोष और जलजलाहट में आकर आज्ञा दी कि शद्रक, मेशक और अबेदनगो को लाओ। तब वे पुरुष राजा के सामने हाजिर किए गए। 14 नबूकदनेस्सर ने उन से पूछा, ''हे शद्रक, मेशक और अबेदनगो, तुम लोग जो मेरे देवता की उपासना नहीं करते, और मेरी खड़ी कराई हुई सोने की मूरत को दण्डवत् नहीं करते, तो क्या तुम जान बूझकर ऐसा करते हो? 15 यदि

तुम अभी तैयार हो, कि जब नरसिंगे, बाँसुली, वीणा, सारंगी, सितार, शहनाई आदि सब प्रकार के बाजों का शब्द सुनो, और उसी क्षण गिरकर मेरी बनवाई हुई मूरत को दण्डवत् करो, तो बचोगे; और यदि तुम दण्डवत् न करो तो इसी घड़ी धधकते हुए भट्ठे के बीच में डाले जाओगे; फिर ऐसा कौन देवता है, जो तुम को मेरे हाथ से छुड़ा सके?''
16 शद्रक, मेशक, और अबेदनगो ने राजा से कहा, ''हे नबूकदनेस्सर, इस विषय में तुझे उत्तर देने का हमें कुछ प्रयोजन नहीं जान पड़ता।
17 हमारा परमेश्वर, जिसकी हम उपासना करते हैं वह हम को उस धधकते हुए भट्ठे की आग से बचाने की शक्ति रखता है; वरन् हे राजा, वह हमें तेरे हाथ से भी छुड़ा सकता है।
18 परन्तु यदि नहीं, तो हे राजा, तुझे मालूम हो, कि हम लोग तेरे देवता की उपासना नहीं करेंगे, और न तेरी खड़ी कराई हुई सोने की मूरत को दण्डवत् करेंगे।''
19 तब नबूकदनेस्सर झुँझला उठा, और उसके चेहरे का रंग शद्रक, मेशक और अबेदनगो के प्रति बदल गया। उस ने आज्ञा दी कि भट्ठे को सातगुणा अधिक धधका दो।
20 फिर अपनी सेना में के कई एक बलवान पुरुषों को उसने आज्ञा दी, कि शद्रक, मेशक और अबेदनगो को बाँधकर उन्हें धधकते हुए भट्ठे में डाल दो।
21 तब वे पुरुष अपने मोजों, अंगरखों, बागों और अन्य वस्त्रों सहित बाँधकर, उस धधकते हुए भट्ठे में डाल दिए गए।
22 वह भट्ठा तो राजा की दृढ़ आज्ञा होने के कारण अत्यन्त धधकाया गया था, इस कारण जिन पुरुषों ने शद्रक, मेशक और अबेदनगो को उठाया वे ही आग की आँच से जल मरे,
23 और उसी धधकते हुए भट्ठे के बीच ये तीनों पुरुष, शद्रक, मेशक और अबेदनगो, बन्धे हुए फेंक दिए गए।
24 तब नबूकदनेस्सर राजा अचम्भित हुआ और घबराकर उठ खड़ा हुआ, और अपने मंत्रियों से पूछने लगा, ''क्या हम ने उस आग के बीच तीन ही पुरुष बन्धे हुए नहीं डलवाए?'' उन्होंने राजा को उत्तर दिया, ''हाँ राजा, सच बात है।''
25 फिर उसने कहा, ''अब मैं देखता हूँ कि चार पुरुष आग के बीच खुले हुए टहल रहे हैं, और उनको कुछ भी हानि नहीं पहुँची; और चौथे पुरुष का स्वरूप ईश्वर के पुत्र के सदृश है।''
26 फिर नबूकदनेस्सर उस धधकते हुए भट्ठे के द्वार के पास जाकर कहने लगा, ''हे शद्रक, मेशक और अबेदनगो, हे परमप्रधान परमेश्वर के दासो, निकलकर यहाँ आओ!'' यह सुनकर शद्रक, मेशक और अबेदनगो आग के बीच से निकल आए।'' वचन 17 –18 कहता है ''17 हमारा परमेश्वर, जिसकी हम उपासना करते हैं वह हम को उस धधकते हुए भट्ठे की आग से बचाने की शक्ति रखता है; वरन् हे राजा, वह हमें तेरे हाथ से भी छुड़ा सकता है। 18 परन्तु यदि नहीं, तो हे राजा, तुझे मालूम हो, कि हम लोग तेरे देवता की उपासना नहीं करेंगे, और न तेरी खड़ी कराई हुई सोने की मूरत को दण्डवत् करेंगे।'' यह परमेश्वर के प्रति उस प्रकार का विश्वास और प्रेम है जो हमारे भीतर अवश्य वास करना चाहिए। यदि हम मर भी जाएं तो भी हमें अन्य देवताओं के आगे कभी नहीं झुकना चाहिए। हमें खिस्तियों के रूप में कभी भी धोखा नहीं देना चाहिए। जिस प्रकार हमें इस संसार में अच्छा काम करने पर प्रोत्साहन मिलता है, उसी प्रकार हमारा प्रतिफल और प्रोत्साहन भी हमारे लिए परमेश्वर के राज्य में जमा होगा। इस देह की लालसा के लिए हमें इस संसार में कभी भी कोई छोटा मार्ग {शॉर्टकट} नहीं खोजना चाहिए। हमारा प्रभु परमेश्वर हमें कभी नहीं त्यागेगा, यह हम ही हैं जिन्हें परमेश्वर के भय और प्रेम में रहना चाहिए।

यशायाह 43: 2 कहता है ''जब तू जल में होकर जाए, मैं तेरे संग संग रहूँगा और जब तू नदियों में होकर चले, तब वे तुझे न डुबा सकेंगी; जब तू आग में चले तब तुझे आँच न लगेगी, और उसकी लौ तुझे न जला सकेगी।'' जब हम परमेश्वर के भय और प्रेम में जीते हैं, तो यह वादा हमारे लिए है। दानिय्येल को सिंह की मांद में डाल दिया गया था, परन्तु सिंह उसे नष्ट न कर सके। इसका मुख्य कारण यह था कि उसने बाबुल में स्वयं को अपवित्र नहीं किया था। हम जानते हैं कि जिन लोगों ने दानिय्येल को गड़हे में डाला, वे मारे गए थे, परन्तु दानिय्येल का शरीर अशुद्ध न होने के कारण सिंह उसके साथ कुछ न कर सका। हमें अपने जीवन में भी एक धर्मी जीवन जीना सुनिश्चित करना चाहिए। यदि हम आज एक पापमय जीवन जीते हैं तो शैतान भविष्य में हमारे जीवन पर विजय प्राप्त करेगा। सिंह किसी भी तरह से दानिय्येल को नुकसान नहीं पहुँचा सका था। यूहन्ना 13 : 32 कहते हैं ''{यदि उसमें परमेश्वर की महिमा हुई है,} तो परमेश्वर भी अपने में उसकी महिमा करेगा और तुरन्त करेगा।'' हमें हमेशा अपने प्रभु परमेश्वर के नाम की स्तुति और महिमा करनी चाहिए, इस प्रकार प्रभु परमेश्वर हमें समय–समय पर ऊपर उठाएंगे। चाहे हम आग से गुजरें, या बाढ़ या खतरे से, हमें चिंता करने की जरूरत नहीं है। मत्ती 5: 16 ''उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने ऐसा चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें।'' इस संसार में हमारे कार्यों के द्वारा, परमेश्वर की महिमा होती है। हमारे बुरे कामों से यहोवा की बदनामी होती है, परन्तु हमारे भले कामों से हमारे प्रभु परमेश्वर की बड़ाई होती है। हमें अपने प्रभु परमेश्वर को दुखी नहीं करना चाहिए, हमें हमेशा प्रभु के प्यार की जरूरत है। याद रखें हम उनका प्यार नहीं खरीद सकते! बल्कि, उन्होंने क्रूस पर अपने जीवन को देकर हमें खरीदा है, प्रभु ने हम पर अपने प्रेम की कीमत चुकाई है। प्रभु को हमेशा हमारे कार्यों से खुश रहना चाहिए। उनकी दृष्टि में हमारे मार्ग मनभावन हों, उनकी कृपा और दया सदा हम पर बनी रहे, उन्हें अपनी सन्तान पर सदैव अभिमान होना चाहिए। इस दुनिया में बहुत से लोग चाहते हैं कि हमारा नाश हो, लेकिन हमारा विश्वास प्रभु पर होना चाहिए। परमेश्वर ने हमें कभी भी परीक्षाओं के बिना जीवन का वादा नहीं किया है। प्रभु ने कहा है ''संसार में तुम्हें क्लेश होता है, परन्तु ढाढ़स बाँधो, मैं ने संसार को जीत लिया है।'' इस प्रकार हमारा विश्वास और भरोसा केवल प्रभु परमेश्वर पर होना चाहिए। 1 पतरस 2 : 12 कहता है ''अन्यजातियों में तुम्हारा चालचलन भला हो; ताकि जिन–जिन बातों में वे तुम्हें कुकर्मी जानकर बदनाम करते हैं, वे तुम्हारे भले कामों को देखकर उन्हीं के कारण कृपा–दृष्टि के दिन परमेश्वर की महिमा करें।'' हमें इस दुनिया के लोगों को खुश करने की परवाह नहीं करनी चाहिए, हमें अपने हर काम में हमेशा प्रभु को खुश करना चाहिए। हम कभी अकेले नहीं हैं, हम अनाथ नहीं हैं, बल्कि प्रभु हमारे पिता हैं। उसे ही इस संसार में महिमा करने की और ऊँचा उठाने की आवश्यकता है। परमेश्वर के राज्य को प्राप्त करने के लिए हमें इस संसार को नकारना होगा। जब इस संसार के लोग हमसे घृणा करते हैं, तो हमें प्रसन्न होना चाहिए कि हम प्रभु के अधिक प्रिय बन जाते हैं। जैसे दाऊद ने पश्चाताप किया, आकान ने पश्चाताप किया और दानिय्येल ने उन चीजों से इन्कार किया जो उसके शरीर को अशुद्ध कर

सकती थीं, इन सब के द्वारा यहोवा परमेश्वर की महिमा हुई। हमें भी परमेश्वर के सामने अपने पापों को स्वीकार करना चाहिए और उनकी प्रतिज्ञा पर चलते रहना चाहिए। हमारा संसार सनातन सिय्योन है, इस संसार में हम केवल सिय्योन की ओर यात्रा कर रहे हैं।

प्रार्थना करें कि यह वचन उन सभी को आशीष दे जो इसे पढ़ते हैं! प्रभु की स्तुति हों!

पास्टर सरोजा